॥श्री जानकीवल्लभोविजयते॥
॥श्रीमते रामानन्दाचार्याय नमः॥

रामात्परं किमपितत्त्वमहंनजाने

श्रीरामपरात्परस्तोत्रम्

ब्रह्मर्थिताद्दशरथात्मजभावयुक्तात्-श्यामावदातवपुषो चिरभांसुकाभात् ।
अध्यात्मयागपरिरक्षणतिग्मषाणात्-रामात्परं किमपि तत्त्वमहं न जाने ॥१॥

क्षत्रान्तकारिहरिबाणधरान्तकर्तु -स्त्रैलोक्यभर्तुरतिशेषसुदर्पहर्तुः ।
वैदेहराजतनयागलरत्नभूपात्-रामात्परं किमपि तत्त्वमहं न जाने ॥२॥

लोकाघपुञ्जपरिनाशकशब्द संज्ञात्-वेदान्ततत्त्वपरिनिष्ठितत्वरूपात् ।
योगीन्द्रचित्तशुचिमन्दिरजातबिम्बात् रामात्परं किमपि तत्त्वमहं न जाने ॥३॥

कैकेयिवाक्यनिजराजतृणोपमान्यात्-पित्राज्ञया परिगताद्वनवासकृच्छ्रात् ।
श्रीचित्रकूटनगवासविलासकान्यात् रामात्परं किमपि तत्वमहं न जाने ॥४॥

श्रीब्रह्मादि देवताओं की प्रार्थना स्वीकार करके जो श्रीदशरथ राजकुमार स्वरूप धारण किये हैं-जिनका श्याम सुन्दर दिव्य मनोहर शरीर है-दिव्य प्रकाश जिनके कान्ति से प्रकाशित हो रहा है-जो अध्यात्म यज्ञ के अनुष्ठान को पूर्ण करने के लिये तीक्ष्ण धनुष बाण धारण कर श्रीविश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा किये हैं-उन प्रभु श्रीराम से परे कोई भी तत्त्व में नहीं जानता हूं ॥१॥

जो क्षत्रियों का विनाश करने वाले-भगवान् विष्णु के धनुषबाण को धारण करने वाले-परशुरामजी के महान् दर्प अहंकार का हरण करने वाले हैं तथा जो त्रिलोकी का भरण पोषण करने वाले हैं, जो श्रीविदेहराजकुमारी के हृदय का हार कण्ठाभूषण स्वरूप हैं ऐसे प्रभु श्रीराम से परे कोई भी तत्व मैं नहीं जानता हूं ॥२॥

जिन का पवित्र नाम सम्पूर्ण पाप पुञ्ज को सद्यः नष्ट कर देता है-वेद वेदान्त के गुह्य सिद्धान्त में जो अपने निज स्वरूप से विराजमान हैं-जिसका प्रतिबिम्ब सर्वश्रेष्ठ योगियों के निर्मल चित्तरूपी पवित्र मन्दिर में प्रतिबिम्बित होता है उन परात्पर परब्रह्म प्रभु श्रीराम से पर कोई तत्व है यह मैं नहीं जानता हूं ॥३॥

श्रीकैकेयी के वचन पर जिन्होंने अपने श्रीअवधराज्य को तृण के समान त्याग दिया तथा पिताजी की आज्ञा से वनवास के महान् कष्ट को जिन्होंने सानन्द सहन किया एवं श्रीचित्रकूट पर्वत पर सुख विलास करने वाले श्रीरामजी को छोड़ कर कोई पर तत्त्व है यह मैं नहीं जानता ॥४॥

सुग्रीवमित्रपरिनिष्ठितसत्प्रभावात् तिग्मेषु बालिहतकीर्तितसत्यभावात् ।
श्रीवातजातपरिवर्द्धितकीर्तिजालात् रामात्परं किमपि तत्त्वमहं न जाने ॥५॥

यः कुम्भकर्णमपिमेघरवं जघान-आस्यावलीदशयुगाङ्कितहस्तशत्रुम् ।
बाणैकतश्च खरदूषणदैत्ययुग्मं रामात्परं किमपि तत्त्वमहं न जाने ॥६॥

लंकाकलंकमरिदोषविमुक्तचित्तात्-श्रीजानकीहितविलास विकासशौर्यात् ।
पौलस्त्यवंशसुविभीषणदत्तराज्याद् रामात्परं किमपि तत्त्वमहं न जाने ॥७॥

पुष्पादियानपरिरूढसकान्तकान्तात् पुण्यात्मभानुपरिचिन्हितकायपद्मात् ।
ब्रह्मादिहेतु परिधारकरामनामात् रामात्परं किमपि तत्वमहं न जाने ॥८॥

श्रीमद्वशिष्ठपरिभाषितवेदतत्व-सिद्धान्तशान्तदुरितौघविकाशबोधात् ।
कालप्रसङ्गसुसहोदरदुरिकारात् -रामात्परं किमपि तत्वमहं न जाने ॥९॥

जो श्रीसुग्रीवजी के साथ मित्रता की सद्भावना से परिपूर्ण हृदय वाले हैं-विश्वविजेता रावण के अहङ्कार को भी चूर करने वाले बालि को जिनके एक ही तीक्ष्ण बाण ने वध करके जिनकी अजेय कीर्ति का सत्य एवं स्वाभाविक परिचय कराया है तथा श्रीपवनकुमार श्रीहनुमानजी ने जिनकी कीर्ति का डंका बजाकर जिनकी महिमा को अपरम्पार बढ़ाया है उन सर्वेश्वर श्रीरामजी को छोड़ अन्य भी कोई परमतत्त्व है यह मैं नहीं जानता हूं ॥५॥

जिन्होंने कुम्भकर्ण तथा मेघनाद को मार डाला और दश मस्तक तथा बीस भुजा वाले रावण को भी मार डाला तथा खर और दूषण जैसे महान् दोनों दैत्यों को भी एक ही बाण से वध कर दिया उन सर्वसमर्थ श्रीराम से अन्य किसी परम तत्त्व को मैं नहीं जानता हूं ॥६॥

अपनी प्रियपत्नी का हरण हो जाने का कलंक निवारण तथा लंका पति जैसे शत्रु का निधन हो जाने से शत्रु तथा कलंक दोनों के निवारण हो जाने से परम प्रसन्नचित्त वाले-श्रीजानकीजी का परम हित तथा सुख विलास का विस्तार करने वाले-शौर्य पराक्रम सम्पन्न एवं पौलस्त्यवंश के धर्मात्मा विभीषणजी को लंका का राज्य प्रदान करने वाले प्रभु श्रीराम से परे किसी अन्य परम तत्त्व को मैं नहीं जानता हूं ॥७॥

अपने प्राणपति के साथ पुष्पक विमान पर विराजमान श्रीसीताजी के पति श्रीसीताकान्त प्रभु से परमपुण्यात्मा सूर्य नारायण के समान सुशोभित श्रीचरणकमल वाले तथा ब्रह्मादिक देवताओं को सुखप्रदान करने के लिये 'श्रीराम' ऐसा मङ्गलमय नाम धारण करने वाले सर्वाराध्य श्रीराम से परे अन्य किसी परम तत्त्व को मैं नहीं जानता हूं ॥८॥

श्रीवशिष्ठजी ने वेदों का तत्त्व सिद्धान्त निर्णय करके समस्त पापों को शान्त करने वाले प्रभु का बोध कराया है तथा "नित्यलीला में प्रवेश करने के समय कालपुरुष के साथ एकान्तवार्ता में किसी को प्रवेश न करने

देना जो मेरी इस आज्ञा का भंग करेगा उसका मैं त्याग कर दूंगा" परन्तु श्रीलक्ष्मणजी ने श्राप के भय से भयभीत हो कर दुर्वासा ऋषि को जाने दिया प्रवेश करने से रोका नहीं इसलिये आपने अपने प्राणप्रिय सहोदर बन्धु का भी त्याग किया-ऐसे नीति धर्म पालक प्रभु श्रीराम से भिन्न किसी परात्पर तत्त्व को मैं नहीं जानता हूं ॥९॥

वैदेहराजतनयार्चितचित्तरत्नात्- पौलस्त्यवंशसुरिपुक्षयकारियत्नात् ।
कीशावतंसपरिसंशित सैन्यसंघात् रामात्परं किमपि तत्वमहं न जाने ॥१०॥

पौलस्त्यवंशभवकंटकनाशहेतो- संसारचक्रपरिवारिजधर्मसेतो ।
ब्रह्मघ्न कोटिदुरितौघविनाशकेतो रामात्परं किमपि तत्वमहं न जाने ॥११॥

त्रैलोक्यपापचितिनाशनसत्कुठारात्-भक्ताजरुद्रहृदयाम्बुजदेवदेवात् ।
कात्यायनीपरममंत्रसुजापरूपात्-रामात्परं किमपि तत्वमहं न जाने ॥१२॥

दैत्यान्तकारिदुरितारिसनातनाद्वा-संसारमोक्षजनिनाममहाप्रभावात् ।
शम्भोः हृदब्जसुनिकेतनविश्वबीजात् रामात्परं किमपि तत्त्वमहं न जाने ॥१३॥

श्रीविदेह राजनन्दिनी के चित्त रूपी रत्न से निरन्तर समर्चित्त प्रभु श्रीराम ने उनके विरह दुःख का विनाश करने के लिये पौलस्त्यवंश के शत्रुओं का जिन्होंने यत्नपूर्वक क्षय किया तथा जिन्होंने वानर-वंश के प्रसंशित वीरों के सैन्यों का संघ तैयार करके राक्षसों का संहार किया उन श्रीराम से परात्पर किसी भी तत्त्व को मैं नहीं जानता हूं ॥१०॥

संसार चक्र को सुचारु रूप से चलाने के लिये संसार के भयंकर कंटक स्वरूप पौलस्त्यवंश के राक्षसों के विनाश का जो करण बने तथा संसार में कमल के समान सुख सौन्दर्य तथा सुगन्ध देने वाले धर्म का सेतु जिन्होंने सुरक्षित किया एवं जो शरण में आये हुए शरणागत के कोटि कोटि ब्रह्महत्या जैसे पापों के समूह का विनाश करने वाले हैं उन श्रीराम से भिन्न किसी भी परम तत्व को मैं नहीं जानता हूं ॥११॥

जो त्रिभुवन के पाप समूह को नष्ट करने में तीक्ष्ण कुल्हाड़े के समान हैं, जो श्रीब्रह्म रुद्रादि भक्तों के हृदय कमल में विराजमान देवों के भी परम देव हैं-श्रीकात्यायनीजी के मंत्र के जप से जो प्राप्त होते हैं उन श्रीराम से परे अन्य किसी परम तत्त्व को मैं नहीं जानता हूं ॥१२॥

जो दैत्यों और पापों का विनाश करने वाले इनके परम शत्रु हैं-जो नित्य सनातन परम प्रभु हैं और संसार बाधा से मुक्त करने वाला जिनके नाम का महान् प्रभाव है तथा जो शङ्करजी के हृदयकमल को अपना निजनिकेतन बनाकर उस में निवास करते हैं उन (संसार के बीजस्वरूप-सर्वकारणरूप) श्रीरामजी से भिन्न किसी परम तत्त्व को मैं नहीं जानता हूं ॥१३॥

पूतीकृताच्चशबरीतनुदामभद्रात् -कर्तुश्च दण्डकवनं परमं पवित्रात् ।
पक्षीन्द्रमुक्तिपरिकल्पन हेतुभूतात्-रामात्परं किमपि तत्त्वमहं न जाने ॥१४॥

काशीनिवासतनुनाशकरात् सदैव-मुक्तिं ददात्यखिलजीवसुखप्रयत्नात् ।
नानोग्रपापहरणात्मवधोऽभिधानात् रामात्परं किमपि तत्वमहं न जाने ॥१५॥

ब्रह्मेशशेषलसदंशकलावतारात् भक्ताघहानिनिजनामविलासधारात् ।
भक्ताम्बुजालिसुखकारणमुक्तिकारात् रामात्परं किमपि तत्त्वमहं न जाने ॥१६॥

परत्वं रामचन्द्रस्य वशिष्ठेन सुभाषितम् ।
पठनाच्छ्रवणान्नित्यं प्रेमा भक्तिप्रदायकम् ॥

॥इतिश्रीमन्महर्षिवशिष्ठ विरचितं श्रीरामपरात्परस्तोत्रम्॥

श्रीमती शबरी को परम पावन बनाने वाले श्रीरामभद्रजी से तथा दण्डकारण्य को पुण्य-स्वरूप पवित्र बनाने वाले परम पावन प्रभु श्रीराम से तथा पक्षिराज जटायु को मोक्ष प्रदान करने की कल्पना को प्रत्यक्ष साकार स्वरूप देने वाले श्रीराम से भिन्न किसी भी परम तत्त्व को मैं नहीं जानता हूं ॥१४॥

श्रीकाशीपुरी में निवासकर शरीर त्याग करने वाले सभी जीवों को जिन का नाम-मंत्र सुनाकर श्रीशंकर भगवान् बिना प्रयास के ही सुखपूर्वक मोक्ष प्रदान करते हैं-जो बड़े बड़े महान् उग्र आत्म हत्यादिक घोर पापों का भी विनाश करने वाले हैं। उन सर्व पापनाशक श्रीरामचन्द्रजी से परे अन्य किसी परम तत्त्व को मैं नहीं जानता हूं ॥१५॥

श्रीब्रह्माजी शंकरजी शेषनारायण इत्यादि जिनके अंश कलावतार हैं-जो अपने नाम के प्रभाव से भक्तों के पापों को विनाश करने हेतु सुन्दर स्वभाव वाले हैं-जो भक्तों को सुख विलास प्रदान कर परम प्रसन्न होते हैं तथा भक्तों के हृदय कमल के प्रेमरस सुधा का पान करने के लिये उनको मुक्ति प्रदान कर सदा सर्वदा अपने धाम में निवास प्रदान करते हैं उन सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी से परे किसी भी परम तत्त्व को मैं नहीं जानता हूं ॥१६॥

॥श्री सीतारामचन्द्रार्पणमस्तु॥

यह स्तोत्र वशिष्ठ संहिता के अंतर्गत है ।

Extraction and Proofreading – Vishal Pandey[IIT KANPUR]